

**पात्रीय** पुं. (तत्.) एक यज्ञ-पात्र वि. (तत्.) पात्र संबंधी।

**पात्रीर** पुं. (तत्.) यज्ञ में समर्पित द्रव्य या वस्तु।

**पात्रोपकरण** पुं. (तत्.) बरतनों को सजाने वाले अलंकरण के कौड़ी आदि तुच्छ साधन, गौण श्रेणी के अलंकरण।

**पाथना** स.क्रि. (देश.) साँचे की सहायता या हाथों से सतहें बनाते हुए लीक पीटकर सुडौल करना, गढ़ना, बनाना 2. किसी गीले उपादान या पदार्थ से साँचे या हाथ से पीटकर या दबाकर बड़ी-बड़ी चपटी टिकिया या पटरा बनाना जैसे- ईंट पाथना, उपले पाथना 3. किसी को ढोंकना, पीटना, मारना जैसे- अच्छी तरह पाथ देना।

**पाथनाथ** पुं. (तत्.) समुद्र, सागर 2. समुद्र के देवता, वरुण, पाथपति।

**पाथरासि** स्त्री. (तत्.) जलराशि, समुद्र।

**पाथा** पुं. (तद्.) 1. जल 2. आकाश 3. अनाज की एक तौल जो लगभग ढाई कि.ग्राम के बराबर होती है, देहरादून में अन्न नापने की एक तौल 4. भूमि का उतना भाग जितने में एक पाथ अन्न बोया जा सके 5. अन्न में लगने वाला एक प्रकार का कीड़ा।

**पाथी** पुं. (तद्.) 1. समुद्र 2. आँख 3. घाव पर पड़ी पपड़ी, खुरंड 4. पथिक, बटोही।

**पाथेय** पुं. (तत्.) कहीं से प्रस्थान करते समय मार्ग में उपयोग के लिए दी जाने वाली सामग्री 2. राहखर्च के लिए लिया गया द्रव्य, संबल 3. शिष्य को वापस घर जाते समय दी जाने वाली दीक्षा।

**पाथोज** पुं. (तत्.) पाथ या जल में उत्पन्न, कमल।

**पाथोधर** पुं. (तत्.) बादल, मेघ।

**पाथोधि** पुं. (तत्.) समुद्र, सागर।

**पाथोनिधि** पुं. (तत्.) समुद्र, सागर।

**पाद** पुं. (तत्.) 1. चरण, पैर, पाँव, पद, समस्त पद में अंतिम पद के रूप में जोड़ने पर सम्मान तथा श्रद्धा भाव प्रकट होता है जैसे- आचार्य पाद 2. मंत्र, श्लोक या छंदोबद्ध काव्य का

चतुर्थांश 3. किसी चीज का चौथाई जैसे- पादमात्र 4. वृक्ष या पौधे की जड़ 5. किसी वस्तु का निचला भाग, तल जैसे- पाद देश 6. किसी बड़े पर्वत के समीप स्थित छोटा पर्वत 7. कहीं से निकलती हुई किरण, रश्मि 8. पद की क्रिया, गमन 9. एक ऋषि 10. शिव 11. अंश, भाग, हिस्सा, टुकड़ा 12. दस ग्राम के लगभग का सोने का सिक्का 13. एक पैर का नाप जो बारह अंगुल की होती है, औषध और उपचारक 15. स्तंभ, खंभा।

**पाद** पुं. (तद्.) गुदा मार्ग से निकलने वाली वायु, अपानवायु, अधोवायु।

**पादक** विं. (तत्.) 1. चौथाई, चतुर्थांश 2. छोटा पैर।

**पादकमल** पुं. (तत्.) कमल के समान चरण, चरण कमल।

**पादकीलिका** स्त्री. (तत्.) पैर का आभूषण विशेष, नूपुर, पायल।

**पादकृच्छ** पुं. (तत्.) चार दिनों में पूरा होने वाला एक कष्टसाध्य प्रायश्चित्त व्रत।

**पादक्षेप** पुं. (तत्.) 1. पैर उठाकर आगे रखना, पादन्यास, चरणन्यास 2. पैर का प्रहार या आघात।

**पादग्रंथि** स्त्री. (तत्.) एड़ी से ऊपर की निकली हुई हड्डी या जोड़, गुल्फ, टखना।

**पादग्रहण** पुं. (तत्.) पैर छूकर प्रणाम करना, पैरों पर पड़ना, चरण स्पर्श।

**पादचारी** पुं. (तत्.) 1. पैदल चलने वाला 2. पैदल सैनिक 3. पदाति।

**पादजल** पुं. (तत्.) पाद-प्रक्षालन (पैर धोने) में प्रयोग किया गया जल, चरणोदक।

**पादटीका/पाद-टिप्पणी** पुं. (तत्.) किसी ग्रंथ में पृष्ठ के नीचे की ओर संदर्भ या विशेषता बतलाने वाली टिप्पणी (फुटनोट)।

**पादतल** पुं. (तत्.) पैर का निचला भाग जो जमीन को स्पर्श करता है, पैर का तलवा।

**पादत्राण** पुं. (तत्.) 1. खड़ाऊँ 2. जूता, चट्टी, चप्पल, सैंडल आदि (जो पैर की रक्षा करने वाली चीजें हैं)।